IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

इन्द्र प्रेमगीत : समीक्षात्मक अध्ययन

Dr. Manoj Kumar Sah
Assistant Professor
L.N.M.U.,DARBHANGA/R.K.C.,MADHUBANI

डॉ. इन्द्र कान्त झा सुप्रसिद्ध आलोचक, कवि आ कथाकार रूपमे व्याख्यात छथि। पटना विश्वविद्यालय, पटनासँ मैथिली विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत भेलाक उपरान्तो निरन्तर मैथिली साहित्य जगतमे लेखनी कार्य चलैत रहलनि। लोकक दुःख, दर्द आ मर्मकेँ अपन साहित्यकार अधार बनौलनि। शांति आ प्रेम समाजमे कोना स्थापित होइन ताहि पर सदिखन चिन्तन आ मनन करैत रहलाह। तकर परिणाम थिक, मैथिली साहित्य जगतमे एकसँ बढ़ि एक अपन अमुल्य कृतिसँ, एहि भंडारकेँ सुसज्जित, सुशोभित आ पल्लवित करैत रहलाह। डॉ. झाकेँ राजभाषा विभाग, बिहार पटनासँ 1987 ई. मे विद्यापति पुरस्कारसँ समान्नित कयल गेलनि। पुनश्च्य बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 2003 ई.मे लोक भाषा पुरस्कार प्राप्त करबाक हिनका सौभाग्य प्राप्त भेलनि, आ साहित्य अकादमीक अनुवाद पुरस्कारसँ 2017 ई.मे सुशोभित कयल गेल। प्रो.(डॉ.) झाक अमुल्य कृति, मैथिली साहित्य जगतमे एहि रूपेँ देखल जा सकैछ– अभिन्न(कथा संग्रह, 1970 ई.), हथकड़ी बाजि उठल(कथा–संग्रह, 1980 ई.), विद्यापति–विमर्श(आलोचना, 1970 ई.), शोध रत्नाकर(आलोचना, 1970 ई.), विद्यापतिकालीन मिथिला(इतिहास ,1986 ई.), मैथिली भाषा विज्ञानःएक आलोचनात्मक अध्ययन(अलोचना, 1990ई.), मैथिली काव्य शास्त्रा(आलोचना, 1990 ई.), लिखनावली(मूलक संग मैथिली अनुवाद), शैवसर्वस्वसार(मूलक संग मैथिली अनुवाद), मैथिली व्यवहारगीत संग्रह(गीत संग्रह), तीन संगी(मूल–रवीन्द्रनाथ टैगोर, मैथिली अनुवाद, 2010 ई.), पाहुन बिलमि जाउ(कविता संग्रह, 2010 ई.), आंगलियात(गुजराती उपन्यास, मैथिली अनुवाद), मदनेश्वरमिश्र (जीवनी,2014 ई.), चल गुजरनी मिथिलाक गाम(कविता संग्रह, 2015 ई.) विद्यापति साहित्यलोचन (आलोचना, 2018 ई.), इन्द्र दिव्यांजलि(हिन्दी कविता संग्रह, 2018 ई.), रवीन्द्रनाथ टैगोरक बीछल कथा संग्रह (मैथिली अनुवाद, 2018 ई.), इन्द्र प्रेमगीत (गीत संग्रह, 2018 ई.) आदि।

प्रो.(डॉ.) झा आलोचना, कथा, गीत किंवा कविता रचना कऽ पाठकक मानस पटलपर सदिखन छायल रहलनि। हिनक जाहि विधाक रचना होइन, पाठककेँ अपना दिश सम्मोहित कयलनि। दोसर शब्दमे प्रो.(डॉ.) झाकेँ सिद्धहस्त साहित्यकार कहल जा सकैछ। एहिठाम हमर समीक्षात्मक पोथी 'इन्द्र प्रेमगीत' अछि, तेँ आलेखकेँ पोथी पर केन्द्रित करब हम आवश्यक बुझैत छी।

'इन्द्र प्रेमगीत' पूर्णतः गीत संग्रहक पोथी थिक। कवि एहि पोथीमे कुल पचपन गोट(55) गीत समेटने छथि, ओहिमे कतेक एहन शिर्षक अछि, जे एक शिर्षक पर चारि–पाँच गोट गीत लिखल अछि। ओना कुल शीर्षक संख्या देखल जाय, तखन सत्तर(70) गोट होइत छैक। यथा– हम प्रेमी छी तोर प्रेमक, प्रेम गुलाबी तन्नुक कोमल, प्रेमक प्रति हो रागक निष्ठा, प्रेम पाकड़िक गाछ थिक, प्रेम कलश भरल मन, प्रेम कलश अछि भरि–भिरि

राखल, प्रेम तोहर छौ बड़ मजबूत, तूँ कर विश्वास हमरा पर, प्रेम गीत तूँ हियसँ गएमे, प्रेमक कविता लिखै ले बैसल छी, प्रेम एकटा स्वप्न मनोहर, जाति धर्ममे भेद ने मानय, चलू–चलू कन्त–दुरन्त, हम अपन रोम–रोमसँ, अहाँ सुनी की नहि, प्रेम भुजंग ससरल, तोहर प्रेमक जतेक तन्तु छल, प्रेम केहन छल, प्रेम गीत गाबय दे हमरा, दुःख के सागर मानव जीवन, प्रेमी छी तँ प्रेमानन्दमे नाचू, प्रेमीक प्रेम परम मनोहर, प्रेमी कहलक प्रेमसँ, प्रेम थिक आनन्दमयी क्षण, प्रेमी कहलक प्रेमसँ, प्रिय अहाँ केर हम प्रेमी छी, प्रेम गीत हमर जँ सन्त सुनत, आमक गाछक फुनगी पर, प्रेमी कहलक प्रेमसँ, आषाढ़क प्रथम दिनक मेघ, प्रेमी कहलक प्रेमसँ, प्रेम हमर थिक 'मूल', जगमे सबसँ अनुपम, जीवनमे धन–दौलत भेटल, प्रेम एहन निश्छल शक्ति थिक, प्रेम करू अग–जगसँ, प्रेमी प्रेमकेँ कहलक, प्रेमी कहलक प्रेमसँ, प्रिय हमर सपनामे अएलहुँ, प्रेमी कहलक प्रेमसँ, प्रिय अहाँ ककरा बजबै छी, प्रेम हमर संग चलैए, प्रिय आँखि मुनलए, प्रेम पिआस अति प्राचीन, प्रेमक बजारमे प्रेम बनल व्यापारी, प्रेम करबा ले विवश छी, प्रेमी चाहय प्रेमसँ, प्रेमक प्रति निष्ठा राखब, कृष्णक बसुरीमे प्रेम बसल, प्रेम हमर अछि सुदृढ़, प्रेम थिक धनगर जंगल, प्रेमी कहलक प्रेमसँ, मोनक भयकेँ दूर करैए प्रेम, प्रेमी छी प्रेमिकाकेँ जानै छी, प्रेम थिक अंगार आदि।

एहि संग्रहमे सम्पूर्ण गीत प्रेम पर केन्द्रित अछि। दोसर शब्दमे ई कहि सकैत छी, जे प्रो. झा प्रेमकेँ पचपन रूपेँ प्रकट कयने छथि। प्रेमक प्रसंगमे गीत लिखअमे हिनक मोन नहि अघाय छनि। एहि प्रसंगमे सविस्तार कहैत छथि–''प्रेम एक आनन्दमय स्थिति थिक, प्रेममे हृदय परिवर्तनक शक्ति अछि। हमरा अन्दर प्रेमक आगमन होइत अछि तँ दोष–दर्शन तथा घृणा, क्रोधादि सन नकारात्मक भाव स्वतः भागि जाइत अछि। प्रेम एवं विवेक भगवानक दिससँ वरदानक रूपमे मानवकेँ भेटल छैक, जकर सदुपयोग कएलासँ ईशक प्राप्ति भए सकैछ।

प्रेम रोमांस मात्रा नहि, गहन आत्मीयता विश्वास आ एकात्मक भवनात्मक प्रतीक थिक। प्रेम बंधन नहि मुक्ति थिकैक। प्रेमक विस्तार मोनक सूक्ष्मलोकसँ लए बाहर प्रकृति आ समाज धरि होइछ। मानवक संबंध जतेक प्रकृतिसँ छैक ओतबय समाजसँ। प्रेमक ई चित्राात्मक विस्तार मानव जीवनमे प्रेमक व्याप्तिकेँ रेखांकित करैत अछि। एहिपर मनुष्य एवं समाजक सुख शान्तिक नींव टिकल छैक।

प्रेम बहैत नदी थिक, इनार नहि। एकरामे परमार्थक महानदके मिलय दियौ किएक तँ स्वार्थक सम्पुटमे बन्द प्रेम महज प्रेमाभास अछि। प्रेम चरम कोटि पर पहुँचला उत्तर भक्तिमय रूप धारण कए लैत छैक।''

कवि अपन पोथी मादे प्रेमक अनेक रूप देखेबाक प्रयास करैत छथि। कविक कहब छनि, जे प्रेमसँ मनकेँ शांति भेटैत छैक, प्रेम तन्नुक कोमल समान होइत अछि, प्रेम निष्ठावान होइत अछि। प्रेमक स्वरूप पाकड़िक गाछ जकाँ झमटगर होइत अछि। जहिना लोक निष्ठापूर्वक कलश भरैत अछि, तहिना प्रेम कलश भरल मन समान थिक एहि संसारमे प्रेमक कलश भरि–भरि राखल अछि। प्रेम मनुक्खक हियमे समायल अछि। प्रेमकेँ विश्वासक प्रतीक मानैत छथि। प्रेम डोरकेँ मजबूत मानैत छथि। प्रेमकेँ स्वप्न मनोहर मानैत छथि। प्रेम जाति–धर्मसँ ऊपर उठल छैक। प्रेमकेँ सगतरि पहूँचेबाक प्रयास करैत छथि। प्रेम रोम–रोममे बसल छनि। एहि रूपेँ हिनक समस्त गीतमे प्रेमक विभिन्न रूपकेँ देखल जा सकैछ।

प्रेम अनादि कालसँ चलि आबि रहल अछि। मनुक्खेटा नहि, पशु–पक्षी आ देवी–देवतामे सेहो स्पष्ट रूपसँ झलकैत अछि। दोसर शब्दमे हम ई कहि सकैत छी जे कालजयी रचना अंतर्गत जतेक वेद–पुराण अबैत छैक सभमे विशिष्ट रूपसँ प्रेमक वर्णन भटैछ। एकर जीवंत उदाहरण रामायण आ गीता मे देखल जा सकैछ। जखन कामदेव स्वयं भष्म भऽ कऽ महादेवक हिय मे समा गेलथि, तखन सधारण मनुक्खक गप्पे नहि कयल जा सकैछ। सृष्टि निमार्णमे प्रेमक एकटा मुख्य भूमिका रहलनि। जखन पशु–पक्षी आ मनुक्खक बीच प्रेम नहि रहत, तखन ई कहबामे कनिको संकोच नहि जे सृष्टिक अंत होमयमे कनिको समय नहि लगतनि। प्रेमक महत्त्व ततवा थिक।

प्रेमपरक रचनाकेँ शृंगार रसक अंतगर्त राखल जाइत छनि। मैथिली साहित्य अंतगर्त मध्यकालमे महाकवि विद्यापतिक एहि प्रसंगक अनेक गीत भेटैछ, आ ई प्रवाह आधुनिक काल धरि निरंतर चलि आबि रहल अछि। जाबत धरि सृष्टि रहत, प्रेम रहबे करत तय छैक, एहिमे कनिको संदेह नहि। अपन–अपन ढ़ंगसँ कवि एकर व्याख्या करैत आयल अछि आ करैत रहताह। मुण्डे–मुण्डे मर्तभिन्ना छैक। एहि भौतिकवादी युगमे जेना प्रेम विलीन भऽ गेल, स्वार्थ विशेष रूपसँ जागृत भऽ गेल अछि। एहि पोथीक रचनाक पाछु कविक मनतव्य इयैह रहल होइन, जे एहि संसारसँ विलीन भऽ रहल प्रेम के एक बेर पुनः जगाओल जाए। कवि अपन चमत्कारी शब्दसँ प्राचीनतामे नवीनता अनबाक पूर्ण प्रयास करैत छथि। अपन आदर्श महाकवि विद्यापति आ विश्वकवि रविन्द्रनाथ टैगोर के मानैत छथि। हुनक मार्गकेँ अनुसरण कए पाठकक समक्ष अपन मोनक भावकेँ प्रकट करैत छथि। प्रेमकेँ स्थापित करबाक हेतु कहैत छथि–

''प्रेम शब्द थिक अमृत
प्रेमक वाणी पिक वाणी।
प्रेमक रूप कृष्ण कन्हैया
राधा मनमे प्रेम बसैया।।''[2]

युगक परिवर्तनक संग–संग मानवकेँ विचारमे सेहो परिवर्तन भेलनि। वर्तमान प्रेमीक काया स्वरूपमे घोर परिवर्तन देखबामे अबैत अछि। आजुक समयमे प्रेम करब अर्थ काम–वासना के पूर्ति करैए धरि सिमटिक रहि गेल। ओहन प्रेमीसँ सकांक्ष रहबाक पूर्ण आवश्यकता थिक। प्रेमी कहलक प्रेमसँ कवितामे कोना समाज के सकांक्ष करैत छैक, देखल जा सकैछ–

''प्रेम पवित्रा सत्यक अनुरागी होइए
प्रेमी केर दुख किएक ने बुझैए
भौंरा बनिकेँ फूल फूलकेर रस चुसैए
राति भेला पर कमल कोरमे सुतैए।''[3]

उपर्युक्त शिर्षक नामसँ तेरह गोट गीत संकलित कयने छथि। विभिन्न राग, भाव–विभाग गीत प्रेमक विभिन्न पक्षके चित्राांकित करैत अछि। प्रेमकेँ परखि उचित मार्गक अनुसरण करबाक हेतु, समाजकेँ अपन कविता मादे सकांक्ष करैत छथि। आषाढ़क वर्षा कोना पिआसल धरतीकेँ अपन बूँदसँ पिआस बुझबैत छैक। धरती बूँदकेँ पाबि सगतरि हरियाली पसारि दैत छैक। आकाश आ धरती के उपमा दऽ कऽ कवि कहैत छथि–

'मुनिक मोन केर मनमोहक पद्मफूल
घनान्धकार केर काया मायामे
चमकै छौ अपार्थिव रत्न जकाँ
तूँ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड केर पालक छेँ
एम्हर ओम्हर किएक ताकै छेँ
जेना लगैए ककरो विदग्ध प्रेमी छेँ
तेँ ककरो इन्तजारमे ठाढ़ रहै छेँ।''[4]

कवि अपन गीत मादे प्रेमकेँ मनुक्खक मूल मानैत छथि, जगमे सभसँ अनुपम वस्तु बुझैत छथि। तँ कतहु प्रेमकेँ निश्छल शक्ति मानैत छथि। कहैत छथि– प्रेम करब सब जनसँ, नफरत भागत मनसँ।''[5]

कतहु प्रेममे संवेदना देखौने छथि–

''मोर गातक गहराईमे
तोर प्रेम नुकाएल

तूँ अपन कायामे
हमर अश्क छिपौने छेॅ।''[6]

पूर्वमे हम सेहो चर्च कऽ चुकल छी जे प्रो.(डॉ.) झा एहि पोथीमे प्रेम के केन्द्रित राखि समस्त गीतक रचना कयने छथि। प्रेमकेॅ विभिन्न स्वरूपक वर्णन कयने छथि। हिनक समस्त गीत के अवलोकन उपरांत गीतात्मक राग, शैलीक घोर अभाव छनि। अलंकार आ छंदक तऽ बाते नहि कयल जा सकैछ, तुकबन्दीक सेहो बेर–बेर खटकैत अछि। गीत कतबो आधुनिकता भऽ जाइ। मुदा लय, राग उत्पन्न नहि कऽ सकल, तखन लोकक कंठमे वास नहि कऽ सकैत अछि। गीतमे राग, लयकेॅ अति आवश्यक तत्व मानल जाइछ। हिनक गीत रागक उत्पन्न नहि कऽ पबैत अछि। तथापि अपन संग्रह मादे जाहि विषय–वस्तु लऽ उपस्थित भेलाह, ओकरा नकारल नहि जा सकैछ। एहि भौतिकवादी युगमे प्रेम विलूप्तक अंतिम कगार पर ठाढ़ भेल नजर आबि रहल अछि। प्रेम हिंसा के छोड़ि अहिंसाक मार्ग प्रस्त करैत अछि, तैॅ एकर महत्व कम भऽ जेतनि से बात नहि थिक। प्रेमक उपमा मैथिली साहित्यक अंतगर्त एकसँ बढ़ि एक भेटैछ, तैॅ एहि पर हम विशेष चर्च नहि करअ चाहब। हम अपन थोड़ शब्दमे इयैह कहि सकैत छी, जे प्रेममे छल नहि होइत छैक, प्रेम त्याग अछि, तपस्या अछि, पूजा अछि, प्रार्थना अछि, इबादत अछि, अरदास अछि। नदी आ झरनाक बाबजूद पपीहा सालोभरि पिआसल रहैत अछि कियक ओकरा स्वातीक बूँदसँ प्रेम रहैत अछि। हजारो सायें अछि संसारमे मुदा चकोरक नजर केवल मात्रा चाँद पर टिकल रहैत अछि, कारण ओकरा चाँदसँ प्रेम रहैत अछि।

संदर्भ–संकेत

1. झा, डॉ. इन्द्रकान्त; इन्द्र प्रेमगीत; राष्ट्रीय प्रकाशन संस्थान, पटना; 2018; पृ. सं.– 03 (दू शब्द)
2. वैह; पृ. सं.– 10
3. वैह; पृ. सं.– 38
4. वैह; पृ. सं.– 49
5. वैह; पृ. सं.– 58
6. वैह; पृ. सं.– 65